आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (मार्च, 16-31, 2026)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं की बुआई और अन्य पद्धतियाँ

फसल मौसम 2025-26

16 से 31 मार्च के दौरान मौसम सामान्यतः गर्म रहने तथा तापमान में धीरे-धीरे वृद्धि होने की संभावना है। इन परिस्थितियों से गेहूं की परिपक्वता में तेजी आ सकती है, इसलिए किसानों को फसल की विभिन्न अवस्थाओं पर बारीकी से नजर रखने और सिंचाई एवं कटाई की योजना उसी के अनुसार बनाने की सलाह दी जाती है।

गेहूं की कुछ किस्मों के ग्लूम तथा पेडन्क्ल पर बैंगनी या काला रंग दिखाई दे रहा है। इसके लिए किसी भी रसायन का छिड़काव करने की आवश्यकता नहीं है। यह स्थिति फरवरी और मार्च के दौरान सामान्य से अधिक तापमान के कारण उत्पन्न हुई है और इससे अनाज की गुणवत्ता या उपज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

सिंचाई प्रबंधन:

- गेहूं के खेतों में जहां हाल ही में हुई बारिश के कारण पानी जमा हो गया है, वहां उचित जल निकासी सुनिश्चित करें। फसल को गिरने से बचाने और संभावित उपज हानि से बचने के लिए अतिरिक्त जमा पानी को तुरंत हटा दें।
- गेहूं की फसल में आवश्यकतानुसार तब सिंचाई करें जब हवा की गति कम हो, अधिमानतः शाम के समय, ताकि फसल को गिरने से बचाया जा सके।
- यदि तापमान में 3 दिनों से अधिक समय तक लगातार और उच्च वृद्धि होती है, तो फूल आने (एन्थेसिस) के बाद 0.2% (200 लीटर पानी में 400 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) की दर से छिड़काव करें।
  या
- गर्मी के तनाव को कम करने के लिए फूल आने (एन्थेसिस) के बाद 2% (200 लीटर पानी में 4 किलोग्राम पोटेशियम नाइट्रेट) की दर से पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें।
- दक्षिणी हरियाणा और राजस्थान के उत्तरी भागों में, उच्च तापमान वाले दिन दोपहर 2 से 2.30 बजे के आसपास एक घंटे के लिए छिड़काव-सिंचाई की जा सकती है।
- दानों को सिकुड़ने और गर्मी से होने वाले तनाव से बचाने के लिए, दानों के भरने की अवस्था में अंतिम सिंचाई करें और फसल को गिरने से बचाने हेतु सिंचाई हवा शांत होने पर ही करें।

एफिड (चेपा) के लिए सलाह:

- गेहूँ में लीफ एफिड (चेपा) पर लगातार नज़र रखें। अगर लीफ एफिड की संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर (ईटीएल: 10-15 एफिड/टिलर) को पार कर जाती है, तो क्विनालफॉस 25% इसी का इस्तेमाल करें। 400 मिली क्विनालफॉस को 200-250 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ में छिड़काव करें।

पीले, भूरे और काले रतुआ के लिए सलाह:

- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धारीदार रतुआ (पीला रतुआ), भूरा या काला रतुआ का प्रकोप होने पर नियमित रूप से अपनी फसल का निरीक्षण करें। यदि किसान अपने गेहूं के खेतों में रतुआ का प्रकोप देखते हैं और इसकी पुष्टि करते हैं, तो प्रोपिकोनाज़ोल 25इसी का एक छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। एक लीटर पानी में एक मिली रसायन मिलाया जाना चाहिए और इस प्रकार 200 मिली फफूंदनाशक को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ गेहूं की फसल में छिड़काव किया जाना चाहिए।
- किसानों को फसल पर तब छिड़काव करना चाहिए जब मौसम साफ हो, यानी बारिश न हो, कोहरा/ओस आदि न हो।

कटाई के लिए सलाह:

- फसल के पकने के बाद, विशेषकर प्रायद्वीपीय क्षेत्र में, कंबाइन रीपर से कटाई करनी चाहिए। यदि फसल की कटाई हाथ से की जाती है, तो थ्रेसिंग के लिए उसे इष्टतम नमी (12-13%) तक सुखा लेना चाहिए।
- कटाई के बाद, बचे हुए फसल अवशेषों को जलाना नहीं चाहिए और बेहतर होगा कि अवशेषों के साथ बिना जुताई के हरी मूंग की फसल बोई जाए; इससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार होगा।

16/3/26

(रतन तिवारी)
निदेशक